

## सुविचार

क्यों डरें कि जिंदगी में क्या होगा,  
हर वक्त क्यों सोचें कि बुरा होगा?  
बढ़ते रहें मंजिलों की ओर हम  
कुछ न भी मिला तो क्या?  
तर्जुबा तो नया होगा।

## अहिंसा



पूरे विश्व में महावीर की पहचान अहिंसा से है और विश्व का भविष्य अहिंसा है। आज हिंसा और आतंकवाद के घिरी दुनिया में अमन-चैन लाने के लिए अहिंसक शक्तियों को आगे आना होगा। अहिंसा का झंडा थामने वाले लोग यह न समझें कि हम दुनिया की आबादी का मुट्ठी भर हैं, क्या कर सकते हैं? थोड़ी सी हिम्मत और ईमानदारी से दुनिया को स्वर्ग में तब्दील किया जा सकता है, छोटी-सी चिंगारी ज्वाला बन जाती है। दुनिया में खून-खराबा बहुत हो चुका, अब अहिंसक-शक्तियां इससे निजात दिलाने आगे आए।

## राम-नाम के जप का महत्व



धर्मशास्त्रों में राम-नाम की महिमा को अपरम्पार बताया गया है। यह अत्यन्त विलक्षण, चमत्कारी और सभी पापों का नाश करने वाला है। पदमपुराण में कहा गया है- जिस प्राणी के कानों में 'राम' का नाम अचानक भी पड़ जाता है, तो वह उसके पापों को उसी प्रकार जला देता है, जिस प्रकार अग्नि की चिंगारी रूई को जला देती है। राम-नाम का हर समय और हर कार्य करते हुए जप करने से मनुष्य को परमगति मिलती है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी राम-नाम की महिमा को 'रामचरितमानस' में इस प्रकार से प्रकट किया है- इस कलियुग में न तो कर्म का ही कोई भरोसा है न ही भक्ति और विवेक का कोई सहारा। यदि कोई सहारा है तो केवल राम-नाम का।

## क्या आपश्री जानते हैं?

- प्रश्न** : किस मक्खी का भोजन मनुष्य खाता है?  
उत्तर : **मधुमक्खी।**
- प्रश्न** : विश्व में सबसे लोकप्रिय खेल कौन-सा है?  
उत्तर : **फुटबाल / क्रिकेट।**
- प्रश्न** : भारतीय रजत पट की प्रथम नायिका कौन थी?  
उत्तर : **देविका रानी।**
- प्रश्न** : किस देश में शादी के लिए ऋण दिया जाता है?  
उत्तर : **कुवैत।**
- प्रश्न** : वह कौन-सा जानवर है जो पैदा होने के दो महिने के बाद तक सोता है और बच्चों की तरह रोता है?  
उत्तर : **भालु।**

## घर के मंदिर में रखें इन बातों का ध्यान



पूजा स्थल की स्थापना उत्तर पूर्व दिशा में ही करनी चाहिए। साथ ही पूजा करते समय हमारा मुख ईशान कोण में हो इसका भी ध्यान रखना चाहिए। मंदिर तक पहुंचे रोशनी और हवा- घर का मंदिर ऐसी जगह पर बनाएं जहां सूर्य की रोशनी और ताजी हवा जरूर आती हो। इससे घर की नेगेटिव एनर्जी खत्म होती है उत्तर पूर्व दिशा में ही करनी चाहिए। साथ ही पूजा करते समय हमारा मुख ईशान कोण में हो इसका भी ध्यान रखना चाहिए। मंदिर तक पहुंचे रोशनी और

हवा- घर का मंदिर ऐसी जगह पर बनाएं जहां सूर्य की रोशनी और ताजी हवा जरूर आती हो। इससे घर की नेगेटिव एनर्जी खत्म होती है और पॉजिटिव एनर्जी का संचार होता है। साथ ही घर के दोष भी दूर होते हैं। छोटी मूर्तियां रखें- मंदिर में रखी मूर्तियां छोटी और कम वजनी ही बेहतर होती है। साथ ही पूजा स्थल पर बीच में भगवान गणेश की तस्वीर या मूर्ति जरूर होनी चाहिए। इसके अलावा देवताओं की दृष्टि एक दूसरे पर नहीं पड़नी चाहिए। अगर कोई मूर्ति खंडित या क्षतिग्रस्त हो

जाए तो उसे तुरंत मंदिर से हटाकर बहते जल में प्रवाहित कर देना चाहिए। मृतात्मा या पूर्वजों की फोटो पूजा घर में देवताओं के साथ नहीं लगाने चाहिए। पूर्वज हमारे श्रेष्ठ हैं, पूजनीय हैं। लेकिन हम उन्हें ईश्वर मानकर उनकी पूजा नहीं कर सकते। बहुत से घरों में रसोई घर में पूजा का स्थान बना लेते हैं जो गलत है। घर के सभी लोग अतृप्त और दुखी रहेंगे क्योंकि भगवान भाव व सुगंध के भूखे हैं। रसोई घर में कई तरह का खाना बनता है- सात्विक भी और तामसिक भी। लिहाजा ऐसे पर पूजा स्थल नहीं होना चाहिए।



## घर की रौनक हैं बेटियाँ.....

हँसते खेलते आँगन की रौनक हैं बेटियाँ।  
रिशतों की बगिया में खिले फूलों की महकती हुई कलिया हैं बेटियाँ।  
फर्ज की दहलीज को सजाती है बेटियाँ।  
पीड़ा दर्द सहती रहती है बेटियाँ।  
अपने हक में जब भी करती हैं फँसला।  
समाज की आँखों में खटकती है बेटियाँ।  
अनचाही खाहिश की तरह पलती है बेटियाँ।  
अपना दर्द बयों नहीं करती है बेटियाँ।  
पराई आँखों का ख्याब है बेटियाँ।  
किसी के चमन का शृंगार है बेटियाँ।  
मांगती मासूम प्यार है बेटियाँ।  
प्यार का मीठा एहसास है बेटियाँ।  
वक्त भी थामकर जिनका आँचल चले।  
टलते जीवन की हर श्वांस हैं बेटियाँ।  
जिनकी झोली है खाली उनको है पता।  
पतझड़ों में भी मधुमास है बेटियाँ।  
गोद में खेती नाजो से पली फिर चली।  
राम सीता का वनवास है बेटियाँ।  
जब विदा हो गई हर श्वांस कह गई।  
देखो जिन्दगी भर की एक आस है बेटियाँ।  
देनों कुल की लाज बचाती है बेटियाँ।  
हँसते-हँसते सब दर्द सह लेती हैं बेटियाँ।  
देवी का रूप है फिर लक्ष्मी का रूप है बेटियाँ।  
क्यों जीवन से पहले ही मौत की गोद सुलाते हो बेटियाँ।  
माँ जब मैं आ गई हूँ बनकर बेटी। क्यों अपने से दूर कर रही हो।  
ना मार मुझे माँ.....ना मार मुझे माँ.....ना मार मुझे। मैं भी तो तेरी जैसी ही हूँ माँ.....

## अनेक बीमारियों की दवा है चीकू



चीकू कई बीमारियों में लाभदायक होता है। चीकू में कैंसर रोधी गुण पाए जाते हैं, विटामिन ए, बी तथा सी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फास्फोरस, आयरन, जैसे पोषक तत्व इनके महत्व और भी बढ़ा देते हैं। चीकू गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए भी उपयोगी माना जाता है। यह गर्भावस्था में कमजोरी, घबराहट और चक्कर आने जैसे प्रभावों को भी कम करता है। पके हुए चीकू में पोटेशियम, तांबा, लोहा, विटामिन ए, बी, सी जैसे

पर्याप्त मात्रा में आयरन व विटामिन भी होता है। चीकू कब्ज और दस्त को दूर करने में सहायक होता है। यह शरीर में रक्त की कमी यानी एनीमिया होने से भी रोकता है। बैलूर स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस के अनुसार चीकू में माँजूद में थार्निन लक फाइटोकेमिकल ट्यूमर में एपोप्टोसिस की क्रिया को बढ़ावा देने में उपयोगी होता है। यह कैमिकल कैंसर के इलाज के लिए दवा निर्माण में मददगार हो सकता है।

## शरीर को मिले आराम

'दशरथ' को मिले 'आराम'- 'आराम' नहीं। दशरथ को आराम यानी हमारे शरीर को आराम मिले। यह सुनकर तमोगुणी खुश होगा कि 'आराम तो हम करते ही रहते हैं।' तब उन्हें बताया जाता है, यहाँ उस आराम की बात नहीं चल रही है। आराम वह जो रावण की मृत्यु के साथ इंसान को मिलता है। आराम वह जो रावण की सेवा समाप्त होने के साथ मिलता है। आराम वह जो कुंभकर्ण, मेघनाथ की मृत्यु के बाद मिलता है। आराम वह जो

गहरी नींद में सोने, के बाद, सोने की लंका, जलने के बाद जाग्रत अवस्था में समाधि से मिलता है। तमोगुणी लोग सुस्ती, तंद्रा, बेहोशी रखनेवाले होते हैं। ऐसे लोगों का आराम 'राम' नहीं है बल्कि उनका आराम 'कुंभकर्ण' का आराम है। वह कुंभकर्ण जो छह महीने से सोता रहता है। रजोगुणी लोग ज्यादा भाग-दौड़, बेचैनी, महत्वाकांक्षाएँ रखने वाले होते हैं। रजोगुणी का आराम भी राम नहीं है। उनका आराम रावण का

आराम है। रावण हमेशा भाग-दौड़ करता रहता है। वह चैन से एक जगह बैठ ही नहीं पाता। रजोगुणी (रावण) और तमोगुणी (कुंभकर्ण) में यह फर्क है कि एक सोने की लंका बनाना चाहता है, एक सोने की तैयारी करता रहता है। अतः शरीर को सत्वगुणी का आराम मिले। सत्वगुणी का आराम ही राम है। सत्वगुणी थकने से पहले ही आराम करता है और सुस्ती आने से पहले काम करता है। यह संतुलन अगर रखा जाए तो शरीर, मन, बुद्धि स्वस्थ रहेगी। वरना लोग पहले थक जाते हैं, फिर आराम करते हैं। जबकि थकने से पहले शरीर को आराम मिलना चाहिए और सुस्ती जाग्रत होने से पहले काम करना चाहिए। कुछ घंटे ज्यादा सोने लग गए तो सुस्ती बढ़ जाती है मगर लोगों को लगता है कि ज्यादा नींद लगी तो ज्यादा ताजा होकर उठें। दोपहर को कोई सो जाए और शाम को बहुत देरी से उठे तो उसे लगता है कि अभी भी हम नींद में ही हैं। उन्हें तरोताजा लगता ही नहीं। जिस वजह से उनके शाम के काम भी नहीं हो पाते हैं इसलिए सुस्ती आने से पहले ही शरीर को कुछ काम मिलना चाहिए।

## दूध का औषधि में उपयोग

'आधा सीसी में - गाय के दूध का खोआ खाना या गाय के दूध में बादाम के टुकड़े डालकर बनायी हुई खीर में शक्कर डालकर पिलाना चाहिये।  
**जीर्ण ज्वर पर-** दूध में गाय का घी, सोंठ, छुहारा और काली दाख डालकर उसे आग पर उबालकर पिलाना चाहिये।  
**मूत्रकृच्छ और मधुमेह पर-** दूध में घी अथवा गुड़ डालकर उसे थोड़ा गरम करके पिलाना अथवा गरम किया हुआ दूध घी के साथ बराबर शक्कर डालकर पिलाना चाहिये।  
आँख उठी होने या जलन

होने पर गाय के दूध में रूई को भिगोकर और उसके ऊपर फिटिकेरी का चूर्ण डालकर आँख के ऊपर पट्टी बाँध देनी चाहिये।  
**पुष्टि के लिये -** गाय का दूध, घी और मधु मिलाकर पिलाना चाहिये।  
**पित्त-विकार के ऊपर -** सात तोला दूध लेकर उसमें आधा तोला से एक तोला तक सोंठ उबालकर खोआ

बनाए, उसमें शक्कर डालकर गोली बना लें, और रात को सोने से पहले प्रतिदिन खिलायें। खाने के बाद पानी न पीने दे। इस प्रकार कुछ अधिक दिनों तक इसका सेवन करना चाहिये।  
चेचक अथवा छोटी माता होने के कारण बालक के शरीर में आने वाले ज्वर के ऊपर - तुरन्त दुहे हुए दूध

और घी को मिलाकर मिश्री डालकर पिलाये।  
**कफ पर -** गर्म दूध में मिश्री और काली मिर्च का चूर्ण डालकर पिलाना चाहिये।  
**सिर के रक्तज और पित्तज रोगों पर -** रूई की मोटी तह करके गाय के दूध में भिगोकर सिर के ऊपर रखें, उसके ऊपर पट्टी बाँध दे। इस प्रकार सवेरे से शाम तक रखें। शाम को सिर धो कर मक्खन लगायें - इस प्रकार दो-तीन दिनों तक करें।  
**नोट -** भारतीय नस्ल की देसी गाय के दूध का ही प्रयोग करना चाहिये।



## मानव मन के बील

(आत्मकथा)

सार-सार गहिले .... थोथा देय उडाय



ये प्रम त्याग सेवा कस्था पे सरलता ये निर्मलता निर्मल जीवन सुई मुई जीवन पाया निर्मल जीवन सुई मुई जीवन पाया मोहित कपर छत कभी न भावा मुझे कपर छल छीद्र नहीं भाता मुझे सरलता चाहिए।  
प्रेम ने कहा जो कि कपट

छल क्या छुपाना है क्या झुठ बोलना क्या ऐसा है जो आप में नहीं कर सकते क्या ऐसा है जो आपका अपना आनन्द बांट नहीं सकते क्या ऐसा है जो नकलीपन का नाटक करना पडता है कुछ नहीं ये जब प्रभु को ना पसंद है। "प्रभु को ना पसन्द है सखती जुबान वे इसलिए तो नहीं दी हडि जुबान में" हमारे शरीर में 206 हडिडया दी हमारे हथेली के अन्दर दस हडिडया दोनों हाथों में सबसे बडी हडिडि हमारे फिमर जमना में बहुत मजबुत है। सबसे छोटी व कोमल हडुडी हमारे कान में पैरो के पंजे में ब्द दिया है। फसलियों की हडिडया 24-24, 12 इधर 588 मांशपेशियो देव देवालय 6 लीटर का रक्त ये देव मन्दिर पाचन तंत्र ये भोजन नली 8-10 इंच होगी जो भगवान न बनाई जो बनाई। अपने हाथ में तो हैं नहीं थोडी है बडी है। जो है। भोजन नली ये हमारा स्टोमा मुदुडी के आकार का हमारा हृदय ये करोड़ो अंगुर के फेफडे ये हमारा अग्नाशय हमारा गाल हिडिडो लिक पचाने के लिए निकालता है। ज्यादा निकालो को एसिडिरी बराबर निकलना चाहिए भगवान निकाल रहा है। एसिडिटी दोगी तो जलन होगी। ईश्वर कितनी कृपा की है सब भुल गये। किसी चक्कर में पड़ गये महाराज। समय बड़ा बलवान है .....

क्रमश अगले अंक में.....

**सम्पादकीय**

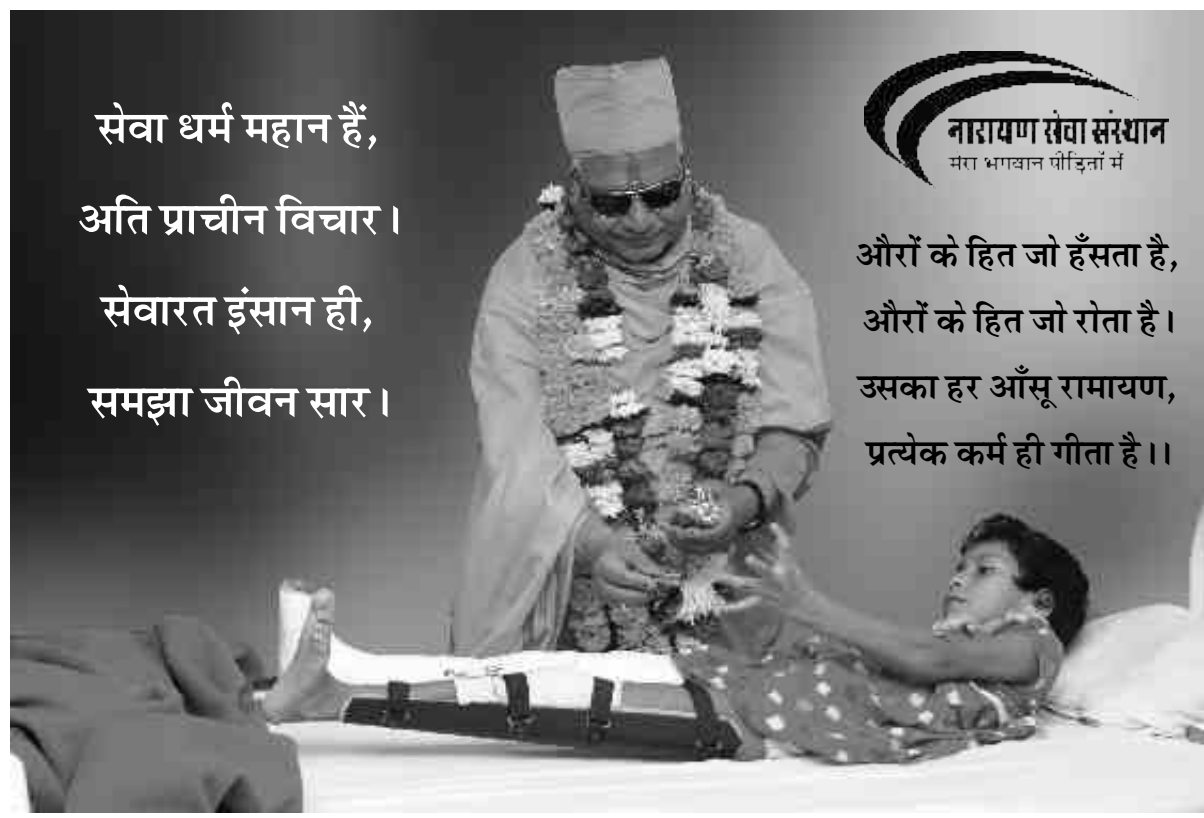
एक बार देवताओं ने विष्णु भगवान से कहा "हमें स्वर्ग से भी किसी अच्छे लोक में भेज दीजिये... विष्णु ने उन्हें मनुष्य लोक भेज दिया और कहा कि वहाँ "सुख और सौंदर्य तभी दृष्टिगोचर होगा, जब तुम लोग करुणा जीवित रखोगे और सेवाधर्म का रसास्वादन करोगे।"

देवताओं ने आकर सभी को दुःखों में डूबे हुए देखा। उन्होंने पीड़ितों व दुःखियों की सेवा शुरू कर दी। कोई मेघ बनकर बरसने लगा। किसी ने उष्मा और उर्जा बिखेरी। कोई रात्रि में शीतलता भरा प्रकाश बाँटने लगा। किन्हीं ने वनोषधियों का रूप बनाया और अपरिग्रही बनकर लोगों की कष्ट मुक्ति का उपाय बताने में लीन हो गये।

बहुत दिन बाद जब विष्णु ने नारद जी को भेजा तो पता लगा कि "देवता लोग सेवा के आनन्द को स्वर्ग से बढ़कर मानते हैं। और उनका वापिस लौटने का मन नहीं है।"

जी हां, ऐसा ही लगने लगता है- जब आदमी अपने आप को भूलकर स्वयं को परहित में लगा देता है। जब हम संस्थान के शिविरों में किसी गरीब बेसहारा से मिलते हैं, तो सब कुछ भूल जाते हैं। यही कारण है कि किसी बीमार की सेवा में जब हमारा ध्यान लग जाता है तो ध्यान हटता नहीं। परसेवा ही मनुष्य जीवन का सच्चा आनंद है जिसके लिए देवता तक लालायित रहते हैं।

हमें तो प्रभु की कृपा से वह सब मिला हुआ है- जिसकी देवताओं ने प्रभु से प्रार्थना की थी। आज मनुष्य जीवन, पारिवारिक सुसंस्कार एवं नारायण सेवा संस्थान जैसा सेवा का क्षेत्र सभी कुछ तो मिला है- हमें? आइये, हम सभी यह सद् संकल्प फिर से दोहराएं कि सेवा का कोई भी अवसर हाथ से जाने न देंगे।



**नारायण सेवा संस्थान**  
मरा भगवान गीदतां मं

**औरों के हित जो हँसता है,  
औरों के हित जो रोता है।  
उसका हर आँसू रामायण,  
प्रत्येक कर्म ही गीता है।।**



**जागर की मीठी**

भलाई स्वतःसिद्ध है, बुराई पकड़ी हुई है। साधक के भाव का दूसरे पर असर पड़ता है। जितना सदाचारी, सद्गुणी साधक होगा, उतना ही उसका संकल्प सत्य होगा। असर उस पर पड़ेगा, जो अपने को शरीर मानता है। कारण कि दोष शरीर में आते हैं। आप शरीर से असंग हो जाओ तो दूसरे की बुरी भावना आप पर असर नहीं करेगी। आकर्षण सजातीयता में होता है। आप में दोष होगा तो दोष को पकड़ेगा। रामजी पर खर-दूषणादि कइयों ने बुरी भावना की, पर उनपर कोई असर पड़ा नहीं। अन्तःकरण अशुद्ध होगा तो अवगुणों को जल्दी पकड़ेगा।

स्वतः काम में न आने वाली होने से रूपया सबसे रदी चीज है। जो रूपयों को बड़ा मानता है, उसकी बुद्धिभ्रष्ट हो जाती है।

सदुपयोग किया जाय तो सभी वस्तुएँ श्रेष्ठ हो जाती हैं दुरुपयोग किया जय तो सभी वस्तुएँ निकृष्ट हो जाती हैं। रूपयों से स्वतन्त्रता नहीं होती, प्रत्युत महान् परतन्त्रता होती है। कारण कि रूपये आपके अधीन हैं, आपके कमाये हुए हैं। रूपयों से आपकी प्रतिष्ठा नहीं है, प्रत्युत फजीती है। आप की इज्जत जड़ के अधीन नहीं है। आप लखपति-करोड़पति होने में अपनी इज्जत मानते हो तो यह इज्जत आप को निर्धनों ने दी है, धनवानों ने नहीं। किसी गाँव में सभी लखपति हों, कोई निर्धन न हो तो क्या वहाँ लखपति की इज्जत होगी?इसी तरह मूर्खोंके कारण ही विद्वान् की इज्जत है। हाँ, फर्क यह है कि धनवान् तो दूसरों को निर्धन बनाता है, पर विद्वान दूसरों मूर्ख नहीं बनाता !

आजकल न भगवान् का न प्रारब्ध का और न पुरुषार्थ का भरोसा है, प्रत्युत झूठ-कपट इष्ट हो गये!

किसी व्यक्ति में दोष मत देखो। दोष स्वभाव में होता है, व्यक्ति में नहीं।

**महात्मा गांधी जी का अनोखा संकल्प**



एक बार महात्मा गांधी जी बिहार के चम्पारन जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के दौरे पर थे। वहाँ उन्होंने मैले-कुचैले वस्त्रों में एक वृद्ध महिला को देखा तो उन्होंने उस वृद्ध महिला को कहा , "माई, तुम्हारे वस्त्र कितने मैले हैं, तुम इन्हें क्यों नहीं बदलती।"

गांधी जी की ये बात सुनकर वह महिला उनको अपनी झोंपड़ी में ले गई और कहने लगी, "आप स्वयं ही देख लो। इन वस्त्रों के अलावा मेरे पास अन्य कोई वस्त्र नहीं है। अब आप ही बताओ कि मैं कैसे अन्य वस्त्र पहन लूँ।" उस महिला का विलाप सुनकर गांधी जी को कोई जवाब न आया। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अपने देशवासियों की ऐसी दरिद्रता भरी दुर्दशा देखकर गांधी जी ने इस गरीबी को दूर करने के लिए ही खादी ग्रामोद्योग आन्दोलन शुरू कर दिया। गांधी जी ने अपने शरीर पर भी कम वस्त्र धारण करने का संकल्प ले लिया।

**चाणक्य नीति**



व्यक्ति को एक श्लोक वेदमंत्र का अध्ययन चिंतन अथवा मनन करना चाहिए। यदि वह पूरे श्लोक का चिंतन-मनन नहीं कर सकता तो उसके आधे अथवा उसके एक भाग का और यदि एक भाग का भी नहीं तो एक अक्षर का ही प्रतिदिन अध्ययन करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य यह है कि वह अपने दिन को व्यर्थ न जाने दे। वह अध्ययन आदि अच्छे कार्यों को करता हुआ अपने दिन को सार्थक बनाने का प्रयत्न करें।

**शुक्रवार का चौघड़िया**

सात तीस से नौ बजने तक, समय लाभ का रहता।  
नौ बजने से साढ़े दस तक, अमृत झरना बहता।।  
बारह से फिर डेढ़ बजे तक शुभ का समय चलेगा।  
शुक्रवार दिन का चौघड़िया, सच्चा समय कहेगा।।

॥ जय नारायण ॥

**बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या**



आज भारत ही नहीं, सारा संसार पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से ग्रस्त है। वर्तमान में पानी, हवा, रेत-मिट्टी आदि के साथ-साथ पेड़-पौधे, खेती एवं कृमि-कीट आदि सभी पर्यावरण प्रदूषण से प्रभावित हो रहे हैं। बड़े-छोटे कारखानों से निकलने वाले अपशिष्टों, परमाणु संयंत्रों से बढ़ने वाली रेडियोधर्मिता, शहरों-कस्बों से मल-जल के निकास से तथा यातायात के यांत्रिक साधनों के कारण सारा वातावरण दूषित हो रहा है। गैस, धुआँ, धुंध, कर्णकटु ध्वनि आदि तरीकों से हर तरह का प्रदूषण पाँच जून को पर्यावरण दिवस भी मनाया जाता है, परन्तु पर्यावरण प्रदूषण कम नहीं हो रहा है।

निरन्तर जनसंख्या की वृद्धि, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण तथा प्राकृतिक संसाधनों का अतिशय दोहन होने से पर्यावरण में निरन्तर प्रदूषण बढ़ रहा है। इससे मानव के साथ ही वन्य-जीवों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है, जैविक विकास

की क्रिया बाधित हो रही है, आनुवंशिक दुष्प्रभाव पड़ रहा है तथा बाढ़ व भू-स्खलन आदि की वृद्धि भी हो रही है। राजस्थान में इसी कारण रेगिस्तान बढ़ रहा है। बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदूषण का सबसे अधिक कुप्रभाव मानव-सभ्यता पर पड़ रहा है जो कि आगे चलकर इसके विनाश का कारण हो सकता है। धरती के तापमान की वृद्धि तथा असमय ऋतु-परिवर्तन होने से प्राकृतिक वातावरण नष्ट होता जा रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रदूषण रोकने के अनेक उपाय कर रहा है। भारत सरकार द्वारा प्रदूषण-निवारण के लिए ये प्रयास किये जा रहे हैं- (1) शहरों के मल-जल के निकास की उचित व्यवस्था की जा रही है। (2) गंगा आदि नदियों को स्वच्छ रखने का प्रयास किया जा रहा है। (3) पर्यावरण संरक्षण के लिए

जन-जागरण भी किया जा रहा है। (4) पेड़-पौधों को रोपने तथा वनों की अवैध कटाई रोकने के लिए उपाय किये जा रहे हैं। (5) वन-संरक्षण के लिए कठोर कानून बनाये गये हैं। (6) पर्यावरण प्रदूषण के अन्य कारणों पर भी प्रतिबन्ध लगाया गया है। हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण के लिए सरकार द्वारा अनेक कदम उठाये जा रहे हैं। देश में पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किया गया है। बड़े उद्योगों को प्रदूषण रोकने के उपाय अपनाने के लिए कहा जा रहा है। सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लांट लगाये जा रहे हैं। साथ ही वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन सब उपायों से पर्यावरण में सन्तुलन रखने का प्रयास किया जा रहा है।

**सरकार LIVE**

*संतुष्ट करिये अपने पित्रों को और पाइये सुरूवी समृद्ध जीवन*

**नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट द्वारा**

**पितृ तर्पण श्रीमद् भागवत कथा**

**सरकार तैनात**  
दिनांक एवं समय  
29 सितम्बर से 1 अक्टूबर  
दोप. 3 से सांय 6.30 बजे  
2,3 अक्टूबर, प्रातः 10 से सांय. 1.30 बजे  
4,5 अक्टूबर, दोप. 1.30 से 3 बजे

**आस्था तैनात**  
दिनांक एवं समय  
6 अक्टूबर से  
12 अक्टूबर 2015  
प्रातः 10 से सांय. 1.30 बजे तक

**स्थान: आजाद पार्क, गया (बिहार)**

**कथा व्यास**  
संज्ञक कृष्ण जी 'सखिल'  
महाराज

**नारायण सेवा संस्थान**  
मुख्यालय 24 घण्टे तत्पर:  
**0294-6622222, 3990000**

**आस्था LIVE**

मुख्य कार्यकारी अधिकारी - कैलाश 'मानव'  
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,  
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा  
मार्गदर्शिका-कमला देवी, बन्दना अग्रवाल  
सहायक प्रबन्धक - सोहन गाडरी  
संपादक - लक्ष्मीलाल गाडरी  
संपादक सहायोगी - घनश्याम सिंह राठौड़